वर्ष 6: अंक 3-4 : मार्च-अप्रैल, 2015

देवभूमि संदेश

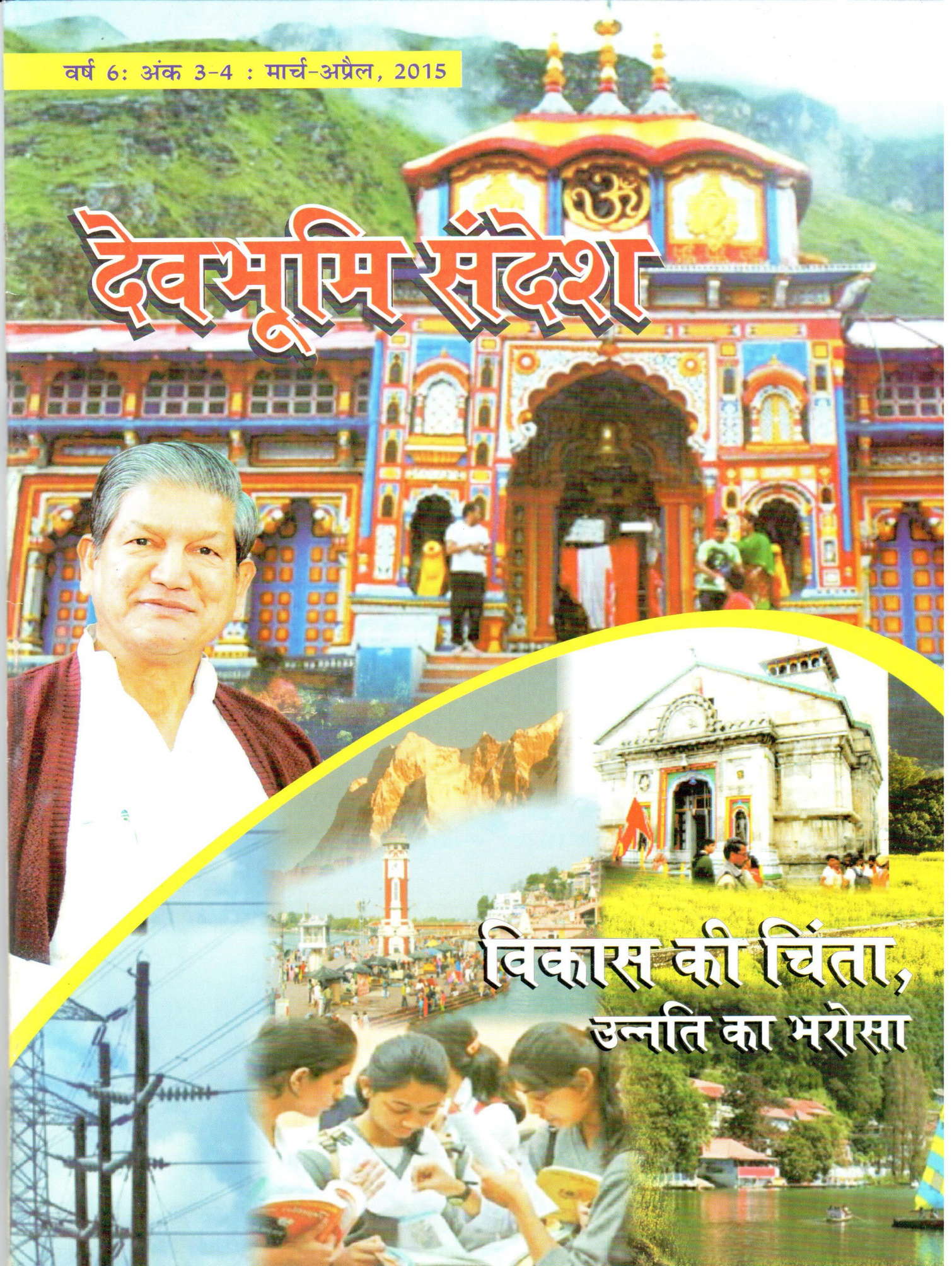

विकास की चिंता, उन्नति का भरोसा

नंदादेवी राजजात 2014 एक अध्ययन

– डॉ. नंद किशोर हटवाल

उत्तराखण्ड में राजजात का आयोजन सदियों से होता चला आ रहा है। कहा जाता है कि नौवीं सदी में पंवारवंशी शासक शालिज पाल ने उत्तराखण्ड में नंदाअष्टमी के अवसर पर प्रतिवर्ष निकलने वाली छोटी-छोटी यात्राओं को मिला कर एक बड़ी यात्रा का आयोजन किया। तब से अब तक कई राजजातों का आयोजन हो चुका है लेकिन हमारे पास प्राचीन यात्राओं के कोई दस्तावेज या अभिलेख नहीं हैं। अभिलेखीकरण/दस्तावेजीकरण के मामले में हम प्रायः उदासीन रहे हैं। खासकर सामाजिक और सांस्कृतिक घटनाओं की कोई रिपोर्ट या दस्तावेज देखने को नहीं मिलते। राजजात लेकर भी यही कुछ हुआ। इतनी बड़ी, विशिष्ट और अपने आप में अनोखी इस यात्रा के किसी प्रकार के प्रमाणिक अभिलेख नहीं मिलते हैं। जो कुछ भी आज हम जानते है, उनका आधार जागर, गीत, लोककथाएं और किंवदंतियां हैं। 19वीं सदी तक किसी यात्री द्वारा लिखा राजजात का यात्रा वृतान्त, डायरी, रजिस्टर, बही या किसी भी रूप में कोई विशेष दस्तावेज उपलब्ध नहीं होते हैं।

पहली बार 1925 में आयोजित राजजात के लिखित विवरण को नौटी गांव के देवराम नौटियाल जी ने सुरक्षित रखा। उसके बाद 1951, 1968, 1987 की राजजात के विवरण भी रजिस्टरों में दर्ज किए गए लेकिन 2000 की राजजात में पुनः कोई राजिस्टर नहीं बनाया जा सका। 1987 की राजजात से पूर्व डॉ. शिवानंद नौटियाल, हरीशचन्द्र चंदोला के प्रयासों से पहली बार राजजात को राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया में स्थान मिला। 1987 की राजजात पर हैडनबर्ग यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर डॉ. विलियम सैक्स ने शोध कार्य कर पुस्तकाकार प्रकाशित किया। इसी वर्ष प्रेम पुरोहित 'राही' द्वारा 1987 की राजजात यात्रा का अपना यात्रा वृतान्त पुस्तिका के रूप में प्रकाशित किया गया। सम्भवतया यह राजजात में शामिल किसी यात्री द्वारा लिखा गया पहला प्रकाशित यात्रा वृतान्त होगा। इसके बाद कमल जोशी ने 1987 की यात्रा का वृतान्त लिखा जो कि पहाड़-3 अंक में छपा। 2000 की यात्रा के वृतान्त न

किशोर हटवाल, निरंजन सुयाल और डॉ. चन्द्रशेखर भट्ट द्वारा पहाड़ सहस्राब्दि यात्रा अंक 1 में छपे। राजू रावत ने पौड़ी से छपने वाले खबर-सार में राजजात-2000 का यात्रा का वृतान्त गढ़वाली में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया। 2000 की राजजात में कैमरा मैन के रूप में यात्रा पर गये सागर बिष्ट का यात्रा वृतान्त 2013 में उत्तराखण्ड फिल्म दर्शन के अगस्त, सितम्बर और अक्टूबर के अंकों में धारावाहिक रूप से छपा। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि पहली बार 1987 में राजजात की यात्रा करने वाले व्यक्तियों के यात्रा वृतान्त प्रकाश में आये। 1987 की राजजात के बारे में प्रिंट मीडिया में भी खबरें, लेख, फीचर आदि के रूप में काफी कुछ छपा। इन सबका अभिलेखीकरण/दस्तावेजीकरण किया जाना आवश्यक है।

2000 की राजजात दस्तावेजीकरण और सूचना संग्रहण की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है। इस राजजात से पहले जून में रमाकान्त बेंजवाल और नंद किशोर हटवाल द्वारा मध्य हिमालय में नंदादेवी के उत्सव एवं जात परम्परा उपशीर्षक वाली एक पुस्तक 'नंदा राजजात-2000' का सम्पादन किया। इस अवसर पर कुछ और सामग्री का प्रकाशन भी किया गया। वर्ष 2000 की राजजात को मीडिया का काफी अच्छा कवरेज मिला। स्थानीय अखबारों से लेकर राष्ट्रीय अखबारों में राजजात के बारे में खबरें आई। इस यात्रा में पचास से अधिक वीडियों फिल्में बनाने वाले नजर आये। ये सामग्री अभिलेखीकरण की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

यह प्रसन्नता की बात है कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, उत्तराखण्ड की प्रतिनिधि संस्था उत्तराखण्ड राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद (यूकास्ट) के वैज्ञानिको ने गतवर्ष 18 अगस्त से 7 सितम्बर तक आयोजित राजजात की अध्ययन रिपोर्ट तैयार की है। यूकॉस्ट के वैज्ञानिक डॉ. अरुण कुकसाल एवं डॉ. कैलाश नारायण भारद्वाज ने अध्ययनकर्ता के रूप में इस राजजात में भाग लिया था तथा उसके बाद उनके द्वारा हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं में यह रिपोर्ट तैयार की गई है। यूकॉस्ट की इस रिपोर्ट का लोकापर्ण मा. मुख्यमंत्री जी ने विगत 26 फरवरी को नवम् राज्य विज्ञान कांग्रेस-2015 के उद्घाटन सत्र में किया।

रिपोर्ट में हिमालयी पारिस्थितिकीय संवेदनशीलता पर पड़ने वाले प्रभावों के वैज्ञानिक अध्ययन की जरूरत बताई गयी है। यूकॉस्ट की इस अध्ययन रिपोर्ट में यात्रा के पर्यावरणीय पहलू, स्थानीय अर्थ व्यवस्था में योगदान, यात्रा में शामिल संस्थाओं की भूमिका तथा वर्ष 2024 में प्रस्तावित यात्रा हेतु सुझाव दिए गए हैं। इन बिन्दुओं के दृष्टिगत अध्ययन करने हेतु अध्ययनकर्ताओं ने इस पूरी यात्रा को रात्रि पड़ावों, भौगोलिक दूरी एवं दुरूहता के आधार पर पांच भागों में बांटा है-

1. नौटी से वाण - 124 कि.मी.
2. वाण से वेदनी - 13 कि.मी.
3. वेदनी से होमकुण्ड - 34 कि.मी.
4. होमकुण्ड से सुतोल - 24 किमी.
5. सुतोल से नौटी - 85 कि.मी.

आगे यात्रा से सम्बन्धित मुख्य बिंदुओं को इन पांचों भागों में पृथक पृथक शीर्षकों के अन्तर्गत दिया गया है। रिपोर्ट के अनुसार राजजात में होमकुण्ड तक 5 से 7 हजार यात्री पंहुचे जो कि अब तक सम्पन्न राजजातों में सर्वाधिक है। रिपोर्ट में कहा गया है कि नंदा राजजात के सफल आयोजन ने राज्य में आयी विगत आपदा के नकारात्मक प्रभावों को कम करने और पर्यटन की दृष्टि से देश-दुनिया में बेहतर संदेश दिया है। इस रिपोर्ट के अनुसार इस राजजात में 200 से अधिक देवी-देवताओं की डोलियाँ और छंतौलियां शामिल हुई। रिपोर्ट में सरकार द्वारा की गई तैयारियों का उल्लेख करते हुए लिखा गया है कि इस राजजात की व्यवस्था के लिए यात्रा मार्ग पर 52 पुल, 80 किमी. का ट्रेक रूट, 13 गावों में पेयजल आपूर्ति हेतु नयी पाइपलाइन, 100 से अधिक शौचालयों का निर्माण किया गया। एसडीआरफ द्वारा यात्रा मार्ग के उच्च हिमालयी निर्जन क्षेत्रों में 7 पैरामेडिक्स को विशेष एवं आधुनिकतम ट्रेनिंग देकर सचल मेडिकल सुविधायें प्रदान करने का भी उल्लेख किया गया है। रिपोर्ट में बताया गया है कि यात्रा के दौरान 50 से अधिक मूर्छित और अति बीमार लोगों को सुरक्षित उपचार एवं स्थानों पर पंहुचाया गया।

वाण से आगे यात्रा में शामिल होने के लिए यात्रियों के बायोमेट्रिक रजिट्रेशन और मेडिकल परीक्षण की व्यवस्था, अक्सा कम्पनी के सोलर लाईट की व्यवस्था का भी उल्लेख रिपोर्ट में किया गया है। इसके अलावा रिपोर्ट में राजजात में मुख्य पड़ावों पर सरकार द्वारा आंशिक रूप में यात्रियों के भोजन की व्यवस्था करने, प्रत्यक्ष रूप से एक लाख तथा अप्रत्यक्ष रूप से डेढ़ लाख लोगों की भागीदारी होने तथा स्थानीय अर्थव्यवस्था में 60 से 75 करोड़ रुपये का टर्न ओवर होने का अनुमान लगाया गया है।

श्रीमती दीक्षा बिष्ट को साइंस एण्ड टैक्नोलाजी एक्सैलेंस अवार्ड से सम्मानित करते हुए मुख्यमंत्री हरीश रावत साथ में कैबिनेट मंत्री सुरेन्द्र सिंह नेगी

यूकॉस्ट की इस रिपोर्ट में यात्रा के पर्यावरणीय पक्ष को लेकर महत्वपूर्ण सुझाव दिए गए है। राजजात के लिए तमाम व्यवस्थाओं को सुचारू करने हेतु किये गये निमार्ण कार्यों, बढ़ते हुए यातायात के दबावों, हजारों लोगों के चलने, खान-पान, प्रयोग की वस्तुओं से स्थानीय जीव-जन्तुओं, फसलों, वनस्पतियों और विशिष्ट प्राकृतिक वातारण को कई दृष्टियों से प्रभावित किया है। अति प्राकृतिक संवेदनशीलता वाले इस क्षेत्र को राजजात से हुए पर्यावरणीय परिर्वतनों एवं हानियों की ओर भी ध्यान खींचा गया है।

आगे रिपोर्ट में इस यात्रा को स्थानीय अर्थ व्यवस्था के लिए लाभप्रद बताया गया है। गांवों में खाली पड़े घरों में रौनक आने, पुश्तैनी भवनों की मरम्मत एवं उसे आवश्यक सुविधाओं से सुसज्जित किए जाने, यात्रा को सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से लाभदायक बताया गया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि यह यात्रा स्थानीय लोगों के लिए विशिष्ट एवं लाभकारी आर्थिक क्रियाकलापों की सौगात है। यात्रियों के भोजन, आवास यातायात, स्थानीय उपजों एवं उत्पादों की बिक्री, सांस्कृतिक कार्यक्रमों आदि से आर्थिक लाभ पहुँचा है। इस रिपोर्ट के अनुसार पूरे आयोजन से स्थानीय अर्थव्यवस्था को 60 से 75 करोड़ रुपये का लाभ हुआ है। खाने-पीने एवं यात्रा संबंधी आवश्यक सामनों की खरीदारी पर 5 करोड़ 40 लाख रूपये स्थानीय बाजार में आने का अनुमान लगाया गया है। आगे यात्रा में शामिल संस्थाओं की भूमिकाओं बारे में भी लिखा गया है कि आयोजन से जुड़े राजजात समिति, शासन-प्रशासन, पुलिस, एसडीआरफ, आईटीबीपी, एसएसबी, निम व गैरसरकारी संस्थाओं ने सुलभ इण्टरनेशनल, स्पैक्स ने अपने-अपने दायित्वों का कुशलतापूर्वक निर्वहन किया।

रिपोर्ट में इस यात्रा पर मा. मुख्यमंत्री जी के वक्तव्य को भी दिया गया है जिसमें कि प्रतिवर्ष होने वाली वेदनी तक की लोकजात में भी राज्य सरकार सहयोगी की भूमिका निभाने, आस-पास नए ट्रेकिंग रूट भी विकसित किए जाने, बुग्याल, जड़ी-बूटियां, व प्रकृति के नुकसान को रोकने की बात कही गई है। मा. मुख्यमंत्री द्वारा श्रीनंदा देवी राजजात को जनभावना की यात्रा बताते हुए कहा गया है कि स्थानीय लोगों की सहभागिता से विश्व की सबसे बड़ी धार्मिक पैदल यात्रा को सफलतापूर्वक सम्पन्न किया गया।

रिपोर्ट में आगामी राजजात तथा वार्षिक जात, जिसे लोकजात कहा गया है हेतु सुझाव देते हुए कहा गया है कि इस यात्रा में बायोमेट्रिक रजिट्रेशन और मेडिकल परीक्षण अनिवार्य कराने के लिए चुस्त व्यवस्था की जानी चाहिए। रिपोर्ट में प्रत्येक पड़ाव पर कम से कम दो सूचना केन्द्र बनाने सचल सूचना केन्द्र बनाने, कूड़ा निस्तारण हेतु प्रत्येक 200 मीटर पर कूड़ा रखने क

स्थान निर्धारित करने, प्लास्टिक, कांच आदि के इस्तेमाल पर रोक तथा कूड़े को इधर-उधर फेकने वालों पर निगरानी रखने के सुझाव दिए गए हैं। रिपोर्ट में सुझाव दिया गया है कि अस्थाई शौचालय जिनमें टाइलैट सीट सीधे गड्डे से जुडी हो, का निर्माण किया जाय, जिससे कम से कम पानी से काम चलाया जा सके। रास्तों के निर्माण के लिए कम से कम जमीन को खोदा जाय। कोशिश की जाय कि पैदल रास्ते पर मिट्टी के स्थान पर पत्थरों का अधिक उपयोग हो, ताकि बारिश के कारण होने वाले कीचड़ से बचा जा सके।

रिपोर्ट में राजजात क्षेत्र का पारिस्थिकीय अध्ययन करके लोकजात और राजजात के लिए जुटाई जाने वाली अधिकतम भौतिक एवं अभौतिक सुविधाओं एवं व्यवस्थाओं का वैज्ञानिक दृष्टि से आंकलन करने का भी सुझाव दिया गया है। साथ ही यात्रा काल में इस क्षेत्र के पर्यावरणीय संतुलन को ध्यान में रखते हुए मानवीय और अन्य व्यवस्थागत दबावों के प्रभावों को न्यूनतम करने के उपायों पर यात्रा से पहले ही विचार करने का सुझाव दिया गया है।

कारगर और आधुनिक संचार सेवायें पर्याप्त एवं दुरस्त स्थिति में उपलब्ध कराने एवं क्षेत्र को व्यापक नेटवर्किंग से जोड़ने, पूरे क्षेत्र में बदलते मौसम की स्थान-स्थान पर निरंतर सूचना प्रदर्शित करने एवं आपातकालीन स्थिति के लिए सूचनातंत्र को बेहद कारगर बनाने, स्थानीय निवासियों को यात्रा के विविध संदर्भों के बारे में प्रशिक्षित करने एवं इस यात्रा से स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करने वाले अवसरों से अवगत कराये जाने के इस रिपोर्ट में सुझाव दिए गये हैं। आगे रिपोर्ट में यह भी सुझाव दिए गए हैं कि लोकजात और राजजात में भाग लेने वाले समस्त लोगों का यात्रा से पूर्व विधिवत पंजीकरण करवाया जाय, पूरे विवरण के साथ स्वस्थता प्रमाणपत्र आवश्यक रूप में संलग्न हो, निर्धारित संख्या में ही लोगों को ऊपर भेजा जाय, यात्रा प्रारम्भ करने वाले स्थान से ही यात्री द्वारा साथ ले जाने वाले सामान का जांच रिकार्ड रखा जाय। यात्रा में अनावश्यक भीड़ को रोका जाय तथा यात्रा व्यवस्था के लिए आर्थिक मजबूती भी बढ़ाई जाय।

रिपोट में राजजात-2014 के अवसर पर पड़ावों एवं पड़ावों के निकटवर्ती स्थानो पर एकत्रित व्यक्तियों की अनुमानित संख्या तथा अनुमानित व्यवसाय (रूपयों में) का आंकड़ा भी दिया गया है। जो कि आगामी यात्रा की व्यवस्थाओं को करने में मददगार हो सकती है। रिपोर्ट में बताया गया है कि विश्व की सबसे लम्बी इस धार्मिक यात्रा में यात्रियों ने पर्यटन, जिज्ञासू शिक्षार्थी, शोधार्थी वैज्ञानिक, समाज वैज्ञानिक और व्यवस्थापक के रूप में भाग लिया। यह यात्रा हिमालय परिस्थितिकी, संवेदनशीलता, मानवीय जीवन, राज्य की गरिमा तथा प्रशासनिक व्यवस्था को कई आयामों से प्रभावित करती है।

वस्तुतः गतवर्ष आयोजित राजजात को लेकर एक महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि पूरे देशभर में इस आयोजन को लेकर उत्तराखण्डी समाज में बड़ा उत्साह देखा गया। कई संस्थाओं द्वारा कई गोष्ठियां, मीटिंग का आयोजन किया गया। इस यात्रा के हर पहलू पर कई बेहतरीन सुझाव आये। लेकिन ये सब उसी अवधि में पैदा होकर समाप्त भी हो गये, इनका संग्रहण संकलन नहीं किया जा सका। लाखों लोगों ने यात्रा में प्रतिभाग किया, अध्यनकर्ता, शोधकर्ता के रूप में शामिल हुए लेकिन जानकारियां इस रूप में एकत्र नहीं हो सकी कि आगामी सांस्कृतिक घटनाओं को बेहतर बनाने में उनका उपयोग किया जा सके साथ ही यहां के पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन और तीर्थाटन के विकास में मददगार हो सके। इस दृष्टिकोण से भी यूकास्ट की यह रिपोर्ट महत्वपूर्ण है।

वास्तव में उत्तराखण्ड की गौरवशाली सांस्कृतिक परम्परा को बताने वाली राजजात के भविष्य के आयोजन संबंधी विभिन्न पहलुओं की बेहतर योजना बनाने हेतु आधारभूत जानकारियां प्राप्त करने में यूकास्ट की इस रिपोर्ट का उपयोग किया जा सकेगा। साथ ही प्रशासनिक स्तर पर इस यात्रा के वृहद् अध्ययन या सम्पूर्ण पहलुओं की रिपोर्टिंग की योजना बनती है तो यह रिपोर्ट इसकी योजना की रूपरेखा तैयार करने में सहायक साबित होगी ही साथ ही उच्च हिमालयी इलाकों में यात्रा एवं पर्यटन संचालन में पर्यावरणीय, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने में भी यह लाभप्रद साबित होगी। वस्तुतः यहां की सांस्कृतिक घटनाओं पर तथ्यपूर्ण तरीके से बहस कर नए परिप्रेक्ष्य में देखे जाने की भी आवश्यकता है, इस दिशा में आगे बढ़ने के लिए यह अध्ययन रिपोर्ट आधारभूमि का काम कर सकती है।

पौड़ी से हिमालय का विहंगम दृश्य

फोटो : त्रिभुवन चौहान

RNI No. UTTHIN/2012/45472 Postal Regn. UA/DO/DDN/978/2012-2014

कार्तिक स्वामी जी, रूद्रप्रयाग

फोटो : त्रिभुवन चौहान

सेवा में, _____

_____

_____

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक चन्द्रेश कुमार आई.ए.एस. महानिदेशक सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग की ओर से सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, 74/1 राजपुर रोड, देहरादून उत्तराखण्ड द्वारा प्रकाशित एवं एलाईड प्रिंटर्स, 84, नहर वाली गली, देहरादून द्वारा मुद्रित। सम्पादक : श्री आशिष कुमार त्रिपाठी, उप निदेशक (मुद्रित प्रतियां 20,000)

उत्तराखण्ड शासन

फोन : 0135-2742223, 2742224 फैक्स : 0135-2742226 ई-मेल : directorinformation@yahoo.com, infodirector.uk@gmail.com वेबसाइट : www.uttarainformation.gov.in